VOL- XIII | ISSUE- III | MARCH | 2026 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.589 | ISSN 2349-638x

दिव्यांगों के लिए अनुराग संगीत संस्थान के सांगीतिक योगदान का अध्ययन

शोध निर्देशिका
डॉ. वन्दना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, मंच कला विभाग
वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

शोधार्थी
अनुज सक्सेना
मंच कला विभाग
वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

सारांश -

दिव्यांगता आधुनिक समाज के समक्ष उपस्थित एक महत्वपूर्ण सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक चुनौती है, क्योंकि शारीरिक या इंद्रियगत सीमाएँ व्यक्ति के जीवन को बहुआयामी रूप से प्रभावित करती हैं। दिव्यांग व्यक्तियों को केवल शारीरिक कठिनाइयों का ही सामना नहीं करना पड़ता, बल्कि मानसिक, सामाजिक और व्यावसायिक स्तर पर भी अनेक अवरोधों से गुजरना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा और कला उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रभावी माध्यम बनती हैं। विशेष रूप से संगीत एक ऐसी सृजनात्मक कला है जो व्यक्ति की आंतरिक संवेदनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए मानसिक संतुलन, आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता को विकसित करती है। भारतीय संगीत परंपरा में श्रुति, स्मृति और साधना का विशेष महत्व रहा है, जो दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए संगीत को अत्यंत अनुकूल बनाता है। श्रवण क्षमता के माध्यम से वे संगीत को गहराई से ग्रहण करते हैं और इसे आत्मनिर्भरता तथा पहचान निर्माण के साधन के रूप में विकसित करते हैं। आधुनिक समावेशी शिक्षा की अवधारणा ने यह आवश्यकता स्पष्ट कर दी है कि दिव्यांग व्यक्तियों के लिए विशेष संस्थागत व्यवस्था आवश्यक है। जयपुर स्थित अनुराग संगीत संस्थान इसी दिशा में कार्यरत एक महत्वपूर्ण संस्था है, जिसकी स्थापना वर्ष 1975 में दिव्यांग विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई। यह संस्थान निःशुल्क प्रशिक्षण, वाद्ययंत्र सुविधा और मंचीय अवसर प्रदान कर विद्यार्थियों में आत्मविश्वास तथा सामाजिक स्वीकृति विकसित करता है। संस्थान से जुड़े कलाकारों के अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि संगीत शिक्षा दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में परिवर्तनकारी भूमिका निभाती है। अनुराग संगीत संस्थान की संगीत योजना यह प्रमाणित करती है कि संगीत केवल कला नहीं, बल्कि दिव्यांग सशक्तिकरण, सामाजिक समावेशन और आत्मनिर्भरता का प्रभावी माध्यम है, जो व्यक्ति को सीमाओं से संभावनाओं की ओर अग्रसर करता है।

मूल शब्द *- दिव्यांगता, दिव्यांग संगीत शिक्षा, समावेशी शिक्षा, अनुराग संगीत संस्थान, संगीत प्रशिक्षण इत्यादि।*

"दिव्यांग' शब्द आधुनिक समय में एक सम्मानजनक एवं सकारात्मक अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित हुआ है, जो व्यक्ति की सीमाओं के स्थान पर उसकी विशेष क्षमताओं को रेखांकित करता है। यह शब्द 'दिव्य' तथा 'अंग' से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है जिसके किसी अंग में सामान्य से भिन्न किंतु विशिष्ट क्षमता विद्यमान हो"।[i] पूर्वकाल में ""विकलांग', 'अपंग' जैसे शब्द प्रचलित थे, जो व्यक्ति की कमी या अक्षमता को केंद्र में रखते थे, किंतु समकालीन सामाजिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण ने यह स्पष्ट किया है कि दिव्यांगता को केवल शारीरिक या मानसिक कमी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह एक बहुआयामी अवधारणा है, जो व्यक्ति की व्यक्तिगत स्थिति के साथ-साथ सामाजिक संरचना, अवसरों की उपलब्धता और संसाधनों की समानता से भी जुड़ी होती है।"[ii]

विभिन्न विद्वानों और संस्थाओं ने दिव्यांगता को अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दिव्यांगता वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक अथवा संवेदी क्षमताएँ सामान्य गतिविधियों के निष्पादन में बाधा उत्पन्न करती हैं। भारतीय विधिक परिप्रेक्ष्य में, दिव्यांगता को ऐसी स्थिति माना गया है जिसमें व्यक्ति की कार्यात्मक क्षमता प्रभावित होती है और उसे विशेष सहायताओं की आवश्यकता होती है।

सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो दिव्यांगता केवल व्यक्ति की सीमा नहीं, बल्कि समाज द्वारा निर्मित बाधाओं का परिणाम भी है, जहाँ समान अवसरों का अभाव व्यक्ति को मुख्यधारा से दूर कर देता है। शैक्षिक दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि दिव्यांग व्यक्तियों को विशेष शिक्षण पद्धतियों, अनुकूल वातावरण और सहायक संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिससे वे अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सकें। इस प्रकार दिव्यांगता को एक व्यापक, संवेदनशील और समावेशी दृष्टिकोण से समझना आवश्यक है, जो व्यक्ति की क्षमताओं को केंद्र में रखता है न कि उसकी सीमाओं को।

दिव्यांगों के लिए संगीत शिक्षा की प्रक्रिया -

"दिव्यांगों के लिए संगीत शिक्षा एक संवेदनात्मक, अनुभवाधारित और समावेशी प्रक्रिया है, जो विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के अनुरूप स्वयं को ढालते हुए व्यक्ति की आंतरिक क्षमताओं को विकसित करती है। यह केवल स्वर, लय और ताल के ज्ञान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व उसकी भावनाओं, संवेदनाओं और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है। संगीत शब्दों से परे जाकर अनुभूति और लय के माध्यम से संवाद स्थापित करता है, जिससे यह दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एक प्रभावी अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए संगीत शिक्षा मुख्यतः श्रवण आधारित होती है, जिसमें वे सुनकर और अभ्यास के माध्यम से संगीत को आत्मसात करते हैं। उनके लिए श्रवण शक्ति एक वैकल्पिक दृष्टि का कार्य करती है, जिससे वे स्वर और लय की बारीकियों को समझ पाते हैं। दूसरी ओर, मूक-बधिर व्यक्तियों के लिए संगीत का अनुभव कंपन और ताल के माध्यम से होता है, जिससे वे इसे महसूस करते हैं। शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए संगीत मानसिक संतुलन, आत्मस्वीकृति और भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनता है। संगीत शिक्षा एक बहुआयामी विकास प्रक्रिया है, जिसमें निरंतर अभ्यास, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और लचीली शिक्षण पद्धति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह दिव्यांग व्यक्तियों के आत्मविश्वास, एकाग्रता और सामाजिक सहभागिता को बढ़ाती है। साथ ही, संगीत के माध्यम से उन्हें रोजगार के अवसर भी प्राप्त होते हैं, जिससे वे आत्मनिर्भर बनते हैं और समाज में अपनी पहचान स्थापित कर पाते हैं। दिव्यांग संगीत शिक्षा का यह स्वरूप तब और अधिक प्रभावी एवं व्यापक हो जाता है जब इसे संस्थागत स्तर पर संगठित रूप में संचालित किया जाता है, जहाँ प्रशिक्षित शिक्षकों, अनुकूल संसाधनों, तकनीकी सुविधाओं और समावेशी वातावरण की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित होती है। भारत में इस दिशा में अनेक संस्थान कार्यरत हैं, जिनमें विशेष रूप से "नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड (NAB) तथा अली यावर जंग नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग डिसएबिलिटीज (AYJNISHD)"[iii] जैसे संस्थान उल्लेखनीय हैं। ये संस्थान दिव्यांग व्यक्तियों को शिक्षा, प्रशिक्षण और पुनर्वास के अवसर प्रदान करते हुए संगीत जैसी कलाओं को भी उनके व्यक्तित्व विकास और सामाजिक समावेशन का माध्यम बनाने का कार्य करते हैं। इन संस्थानों के माध्यम से दिव्यांगजन अपनी क्षमताओं को पहचानने और उन्हें विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ते हैं, जिससे उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन संभव हो पाता है।

इन विविध प्रयासों के बीच अनुराग संगीत संस्थान, जयपुर का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण और विशिष्ट रूप में उभरकर सामने आता है। "यह संस्थान केवल शिक्षण प्रदान करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शिक्षा, अभ्यास, मंचीय अनुभव और सामाजिक सहभागिता इन सभी आयामों को एकीकृत रूप में संचालित करता है।[3]

अनुराग संगीत संस्थान, जयपुर -

"दिव्यांग व्यक्तियों के लिए संगीत शिक्षा को सुलभ, प्रभावी और जीवनोपयोगी बनाने की आवश्यकता ने अनुराग संगीत संस्थान, जयपुर की स्थापना को जन्म दिया। वर्ष 1975 में डॉ. अजीत कुमार जैन द्वारा स्थापित यह संस्थान केवल एक शैक्षिक केंद्र नहीं, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन का रूप है, जिसकी नींव उनके व्यक्तिगत अनुभवों, संघर्षों और दूरदर्शी दृष्टि पर आधारित है। स्वयं दृष्टिबाधित होने के कारण डॉ. जैन ने जीवन के प्रारंभिक चरण में ही यह अनुभव कर लिया था कि दिव्यांग व्यक्तियों के सामने सबसे बड़ी बाधा उनकी शारीरिक अक्षमता नहीं, बल्कि अवसरों, संसाधनों और उचित मार्गदर्शन की कमी है। अपने साक्षात्कार में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि दिव्यांग व्यक्ति को दया नहीं, बल्कि अवसर और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। यही विचार उनके जीवन का मार्गदर्शक सिद्धांत बना और इसी से प्रेरित होकर उन्होंने एक ऐसे संस्थान की स्थापना की, जो दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर सके।"[iv]

"डॉ. जैन का मानना था कि संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति, आत्म-स्वीकृति और सामाजिक पहचान का सशक्त माध्यम है। उन्होंने समाजशास्त्र और भारतीय संगीत दोनों में उच्च शिक्षा प्राप्त की और यह समझ विकसित की कि शिक्षा और कला का समन्वय व्यक्ति के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। उनके अनुसार संगीत वह माध्यम है, जो व्यक्ति को उसकी सीमाओं से ऊपर उठाकर उसे अपनी आंतरिक क्षमताओं को पहचानने और उन्हें विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। इसी दृष्टिकोण को व्यवहार में लाने के लिए उन्होंने अनुराग संगीत संस्थान की स्थापना की, जहाँ संगीत शिक्षा को जीवन-कौशल के रूप में विकसित किया गया।"[v]

संस्थान की स्थापना ऐसे समय में हुई, जब दिव्यांग शिक्षा के क्षेत्र में संगठित प्रयास अत्यंत सीमित थे। प्रारंभिक वर्षों में संसाधनों की कमी, सामाजिक उपेक्षा और जागरूकता के अभाव जैसी अनेक चुनौतियाँ सामने थीं, किन्तु डॉ. जैन की दृढ़ इच्छाशक्ति और समर्पण ने इन सभी बाधाओं को पार किया। उन्होंने एक ऐसा वातावरण निर्मित किया, जहाँ दिव्यांग विद्यार्थियों को निःशुल्क संगीत शिक्षा, वाद्ययंत्रों की सुविधा, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और मंचीय अवसर प्रदान किए जाते हैं। उनके अनुसार "मंच ही कलाकार को समाज से जोड़ता है," इसलिए संस्थान में नियमित रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने और आत्मविश्वास विकसित करने का अवसर मिल सके।

डॉ. जैन के साक्षात्कार में यह भी स्पष्ट होता है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को संगीत सिखाने की प्रक्रिया विशेष धैर्य और संवेदनशीलता की मांग करती है। उन्होंने बताया कि ऐसे विद्यार्थियों को प्रत्येक स्वर, ताल और वाद्य को स्पर्श और श्रवण के माध्यम से समझाना पड़ता है, जिसके लिए शिक्षक को अधिक समर्पण और पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है। यह शिक्षण पद्धति न केवल संगीत सिखाने का कार्य करती है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का भी विकास करती है।

अनुराग संगीत संस्थान की स्थापना के प्रभाव को समझने के लिए दृष्टिबाधित कलाकार अशोक कोहली का जीवन एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। बाल्यावस्था में दृष्टि खो देने के बाद उनके जीवन में एक गहरा परिवर्तन आया, किन्तु यह परिवर्तन निराशा का कारण न बनकर संगीत की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा बना। अपने साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि दृष्टि चली जाने के बाद संगीत ही वह माध्यम था, जिसने मुझे मेरा आत्मविश्वास वापस दिलाया। लगभग सोलह वर्ष की आयु में वे अनुराग संगीत संस्थान से जुड़े और यहीं से उनकी औपचारिक संगीत शिक्षा प्रारंभ हुई।

संस्थान में प्राप्त प्रशिक्षण, गुरु मार्गदर्शन और निरंतर रियाज़ ने उनके व्यक्तित्व को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने शास्त्रीय संगीत में विशेष रुचि विकसित की और भातखंडे संगीत विद्यापीठ से 'विशारद' उपाधि प्राप्त की। उनकी पहली मंचीय प्रस्तुति ने उनके भीतर आत्मविश्वास का संचार किया और आगे चलकर प्रसिद्ध संगीतकारों के समक्ष प्रस्तुति देना उनके लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि मंचीय प्रस्तुतियों के माध्यम से समाज का दृष्टिकोण उनके प्रति परिवर्तित हुआ और लोग उन्हें एक दिव्यांग व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक कलाकार के रूप में पहचानने लगे।

"अशोक कोहली का अनुभव यह दर्शाता है कि अनुराग संगीत संस्थान की स्थापना केवल एक शैक्षिक पहल नहीं थी, बल्कि यह दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में वास्तविक परिवर्तन लाने का माध्यम बनी। इस संस्थान ने उन्हें न केवल संगीत का ज्ञान दिया, बल्कि आत्मविश्वास, सामाजिक पहचान और आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर भी प्रदान किया।"[vi]

डॉ. अजीत कुमार जैन की दूरदर्शिता, मानवीय संवेदना और सामाजिक प्रतिबद्धता से स्थापित अनुराग संगीत संस्थान, जयपुर एक ऐसे सशक्त केंद्र के रूप में विकसित हुआ है, जहाँ संगीत शिक्षा के माध्यम से दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन संभव हो सका है। यह संस्थान इस बात का जीवंत उदाहरण है कि जब व्यक्तिगत अनुभव, सामाजिक दृष्टि और समर्पित प्रयास एक साथ मिलते हैं, तब वे शिक्षा को केवल ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे जीवन परिवर्तन का माध्यम बना सकते हैं।

अनुराग संगीत संस्थान के उद्देश्य एवं प्रशिक्षण पद्धति -

अनुराग संगीत संस्थान की कार्यप्रणाली एक समन्वित दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें उद्देश्य, संगीत योजना और प्रशिक्षण पद्धति एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। संस्थान का प्रमुख उद्देश्य दिव्यांग विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा के माध्यम से आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता

की ओर अग्रसर करना है। इसके साथ ही यह संस्थान समाज में दिव्यांगजनों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने और उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य भी करता है। यहाँ संगीत को केवल एक कलात्मक कौशल के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास और सामाजिक सशक्तिकरण के साधन के रूप में देखा जाता है।

संस्थान की संगीत योजना इस प्रकार निर्मित की गई है कि यह विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के अनुरूप शिक्षण को लचीला और प्रभावी बना सके। "दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए श्रवण आधारित अधिगम को केंद्र में रखा गया है, जहाँ वे सुनकर, दोहराकर और निरंतर अभ्यास के माध्यम से संगीत को आत्मसात करते हैं। वहीं अन्य दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उनकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण पद्धति में आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैं।" इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत मार्गदर्शन, निरंतर अभ्यास और संवेदनात्मक अनुभव को विशेष महत्व दिया जाता है, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति और क्षमता के अनुसार सीख सके।

प्रशिक्षण पद्धति भारतीय संगीत की गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित है, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी के बीच सीधा संवाद और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रमुख भूमिका निभाते हैं। विद्यार्थियों को स्वराभ्यास, रागों की समझ, लय प्रशिक्षण तथा वाद्य अभ्यास के माध्यम से क्रमिक रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। प्रारंभिक स्तर पर स्वरों की पहचान और तालबोध पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिसके पश्चात उन्हें शास्त्रीय संगीत, भजन तथा अन्य संगीत शैलियों में दक्ष बनाया जाता है। सामूहिक रियाज़ की व्यवस्था विद्यार्थियों में अनुशासन, समन्वय और निरंतर अभ्यास की प्रवृत्ति विकसित करती है।

संस्थान की एक प्रमुख विशेषता इसकी निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को बिना किसी शुल्क के प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है तथा आवश्यक संसाधन भी उपलब्ध कराए जाते हैं। हारमोनियम, तबला जैसे वाद्ययंत्रों की सुविधा तथा आधुनिक तकनीकी साधनों जैसे "इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा और रिकॉर्डिंग माध्यम का उपयोग शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाता है।" इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों और मंचीय प्रस्तुतियों में भाग लेने का अवसर दिया जाता है, जिससे उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होता है और उनका आत्मविश्वास सुदृढ़ होता है। अनुराग संगीत संस्थान की उद्देश्यपूर्ण योजना और व्यवस्थित प्रशिक्षण पद्धति मिलकर एक ऐसे शैक्षिक मॉडल का निर्माण करती है, जो दिव्यांग विद्यार्थियों के समग्र विकास शैक्षिक, सामाजिक और व्यावसायिक को सुनिश्चित करती है और उन्हें समाज में एक सम्मानित स्थान प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाती है।

निष्कर्ष -

दिव्यांगता को समकालीन परिप्रेक्ष्य में केवल शारीरिक अथवा मानसिक सीमा के रूप में न देखकर उसे संभावनाओं और विशिष्ट क्षमताओं के संदर्भ में समझना आवश्यक है। दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में शिक्षा और कला, विशेष रूप से संगीत, एक ऐसे माध्यम के रूप में उभरते हैं जो उनके व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास को सुनिश्चित करते हैं। संगीत अपनी संवेदनात्मक एवं अनुभवात्मक प्रकृति के कारण आत्म-अभिव्यक्ति, मानसिक संतुलन, आत्मविश्वास तथा सामाजिक सहभागिता को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दिव्यांग संगीत शिक्षा, जब समावेशी और अनुकूल शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से संचालित होती है, तब यह केवल एक कौशल-आधारित प्रशिक्षण न रहकर आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और सामाजिक पहचान का सशक्त आधार बन जाती है। दृष्टिबाधित, मूक-बधिर तथा शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के संदर्भ में संगीत एक वैकल्पिक संवेदनात्मक माध्यम के रूप में कार्य करता है, जो उनकी आंतरिक क्षमताओं को विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

अनुराग संगीत संस्थान, जयपुर का उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि संस्थागत प्रयास दिव्यांग संगीत शिक्षा को प्रभावी एवं परिणामोन्मुख बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। डॉ. अजीत कुमार जैन के नेतृत्व में स्थापित यह संस्थान संगीत शिक्षा को आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान और सामाजिक सशक्तिकरण से जोड़ते हुए एक समावेशी शैक्षिक मॉडल प्रस्तुत करता है। संस्थान की निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था, गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित प्रशिक्षण, व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा मंचीय अवसरों की उपलब्धता इसे विशेष रूप से प्रभावी बनाती है। अशोक कोहली जैसे कलाकारों के अनुभव यह प्रमाणित करते हैं कि उपयुक्त प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता और निरंतर अभ्यास के माध्यम से दिव्यांग व्यक्ति भी संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं तथा समाज में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर सकते हैं।

अत: संगीत केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि दिव्यांग सशक्तिकरण, सामाजिक समावेशन और आत्मनिर्भरता का एक प्रभावी माध्यम है। अनुराग संगीत संस्थान, जयपुर का कार्य यह दर्शाता है कि शिक्षा, संवेदना और संस्थागत प्रयासों के समन्वय से दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में व्यापक एवं सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

सन्दर्भ सूची -

i विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2011). *वर्ल्ड रिपोर्ट ऑन डिसएबिलिटी.* जेनेवा: डब्ल्यूएचओ प्रेस. पृ.सं.-25।

ii संयुक्त राष्ट्र संगठन. (2006). विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर अभिसमय (CRPD). न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र. पृ.सं.-10।

iii National Association for the Blind. (2018). वार्षिक प्रतिवेदन. मुंबई: NAB. पृ.सं.-25।

iv साक्षात्कार, जैन, अजीत कुमार जैन. (2010). जयपुर ।

v साक्षात्कार, जैन, अजीत कुमार. (2010). जयपुर।

vi साक्षात्कार, अशोक, कोहली. (2012). जयपुर।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com